ईमानदारी की कुल्हाड़ी

—अवधेश सिंह

और अंततः उसने आगे न जाकर नदी की ओर दौड़ लगा दी वह तुरंत दोनों सोने व चाँदी की कुल्हाड़ियों को गहरी नदी में फेंककर इस लालच और बेईमानी से जैसे तत्काल छुटकारा चाहता था नदी की तेज धारा का शोर उसके कानों तक पहुँचने लगा, नदी की स्वच्छ असीम जल राशि को छूकर आने वाली ठंडी हवा ने लकड़हारे के पसीने-पसीने बदन में एक अजीब-सी सिहरन पैदा कर दी और लकड़हारा जैसे-जैसे नदी की धार की ओर बढ़ता जा रहा था उसका मस्तिष्क तमाम दुश्चिंताओं से मुक्त होता जा रहा था कि तभी पगडण्डी से नदी की रेत के जुड़ने के बिंदु पर एक अधकटे पेड़ के ठूठ से उसका पैर टकराया और एक जोर की चीख से वह धड़ाम से गिरा।

पेड़ के नीचे लकड़ियों के छोटे ढेर पर निगाह डालते हुए लकड़हारा मायूसी से सोच रहा था कि आज की जरूरतों को पूरा करने के लिए इतनी लकड़ी पर्याप्त नहीं हैं, नदी के किनारे पेड़ की डाल पर चढ़कर दूसरी ओर मजबूत तने के सहारे खड़ा होकर लकड़हारा एक डाल पर कुल्हाड़ी के पुरजोर वार कर रहा था तभी उसके हाथ से कुल्हाड़ी छूट कर नीचे गिरी।

कुल्हाड़ी से तने पर की गयी चोट के जबर्दस्त उछाल से देखते-देखते कुल्हाड़ी दूर नदी की धार में समा गयी। लकड़हारा हक्का-बक्का पेड़ के नीचे खुद को गिरने से बचाते हुए यह दृश्य देखकर मायूसी और बेबसी के दर्द से कराह उठा। नदी अपने धार के उफान पर मदमस्त वेग के साथ कल-कल करती रही और दिन के पूर्वान्ह के तपते सूरज की तपिश लकड़हारे के बदन से बूँद-बूँद कर टपकते पसीने से प्रकट हो रही थी।

निराशा, हार और उदासी ने लकड़हारे को घोर संकट में डाल दिया था, लकड़ी के छोटे ढेर से उसकी आवश्यकतायें पूरी जो नहीं होनी थीं उसकी रोजी-रोटी का एकमात्र साधन जुटाने वाली कुल्हाड़ी नदी की गहराइयों में खो चुकी थी उसकी आँखों से अश्रुधारा अनायास ही बह चली, बाजार में वर्तमान की मँहगाई के चलते तमाम उधार देनदारियों के कारण उसे आज राशन के जुगाड़ के न होने का भी भय था, घर पर होने वाले कोहराम के डर से भी वह भयभीत था।

तभी उसे लगा कि कोई महापुरुष जैसी वेशभूषा में व्यक्ति नदी की तेज धारा को चीरते हुए उसकी तरफ आ रहा है, नजदीक आने पर उसने देखा कि उसके हाथ में कोई वस्तु है जो दिन के प्रकाश में चमक रही है, पास आते ही उस महापुरुष ने लकड़हारे को ढाँढस बँधाते हुए उसको एक चाँदी की कुल्हाड़ी दी और सांत्वना देते हुए कहा कि यह चाँदी की कुल्हाड़ी नदी से निकली है यदि यह वही तुम्हारी कुल्हाड़ी है जो नदी में गिरी है तो तुम इसे रख लो। इतना कहकर वह महापुरुष बिना अपना परिचय दिए गायब हो गया।

लकड़हारा को जैसे लकवा मार गया वह इस अप्रत्याशित सहायता से हतप्रभ हो गया उसने कुल्हाड़ी को देखा यह उसकी नहीं थी उसके मन में विचार आया की मददगार को यह कुल्हाड़ी वापस कर देनी चाहिए और उससे कह देना चाहिए कि जो कुल्हाड़ी उसकी नदी में गिरी है वह मोर्चा खाई एक पुरानी लोहे की कुल्हाड़ी है जिसकी तेज धार से लकड़ी काटकर, उसे बाजार में बेचकर वह अपनी रोज की जरूरतें पूरी करता है।

तभी उसके मन का लालच जाग उठा और मन ने उसे टोका 'नहीं यह अच्छा मौका है उसे इस चाँदी की कुल्हाड़ी रख लेनी चाहिए इसे बाजार में बेचकर वह लोहे की कई नई तेज धार कुल्हाड़ी खरीद सकता है तथा बचे धन से अपने सभी कर्ज अदा कर सकता है' तभी उसे याद आई उसकी झोपड़ी की छेद-दार छत जिससे थोड़ी ही बारिश में उसकी झोपड़ी के अन्दर का समान तर-बतर हो जाता है चाँदी की कुल्हाड़ी के पैसे से वह इसे भी मरम्मत कराने की सोच बैठा।

उसे एक अन्य महान विचार तभी आया उसने सोचा यदि वह सारी बात, पूरी सच्ची कहानी कोतवाल को बताकर इस चाँदी की बेशकीमती कुल्हाड़ी राजा के खजाने में जमा कर दे तो अवश्य ही राजा उसको इस ईमानदारी के लिए पुरस्कार दे और उसकी गरीबी-लाचारी को देखते हुए दरबार की नौकरी भी। उसने मन में कहा 'नहीं-नहीं कहीं चाँदी की कुल्हाड़ी पर कोतवाल या सिपाही की बुरी नजर लग गयी, सब बेईमान जो ठहरे। चाँदी की कुल्हाड़ी से हाथ भी धोना पड़ेगा और कहीं इसकी चोरी के इल्जाम में मुझे कारावास न भेज दें।' उसने एक लम्बी साँस ली।

अभी नदी के किनारे वह इस सोच में खोया ही हुआ था कि तेज हवा चली और उसके नजदीक ही नदी से निकलने वाला वही महापुरुष उसके सामने खड़ा था उसके हाथ में एक सुनहरी वस्तु चमचमा रही थी उसने कहा—अरे लकड़हारे यदि यह चाँदी की कुल्हाड़ी से तुम संतुष्ट नहीं हो और यदि यह तुम्हारी खोई हुई कुल्हाड़ी नहीं है तो तुम इसे भी परख लो-जाँच लो और जो कुल्हाड़ी तुम्हारी लगे उसे रखकर दूसरी कुल्हाड़ी को नदी को वापस कर दो, यह कहते हुए उस महापुरुष ने सोने की सुनहरी चमचमाती कुल्हाड़ी भी लकड़हारे को सौंप कर अंतर्ध्यान हो गया।

उसके नजरों से ओझल होते ही लकड़हारा कभी चाँदी की कुल्हाड़ी देखता तो कभी सोने वाली, वह असमंजस में पड़ गया। उसने विचार किया कि शायद आज भाग्य उसके साथ है, शायद आज उसके सपनों के पूरे होने का समय है उसे अपने पूर्वजों के आशीर्वाद याद आने लगे, उसे अपनी घोर गरीबी-लाचारी, मायूसी, भूख, यंत्रणा सब एक-एक करके याद आने लगीं। वह दुविधा के समुद्र में डूबने-उतराने लगा एक मन कह रहा था कि वह दोनों अपरचित कुल्हाड़ियों को नदी में प्रवाहित कर पुण्य कमाए और इस पुण्य के प्रताप को परम संतोष मानकर गरीबी-कर्ज में डूबी जिंदगी पर पुनः चल दे।

दूसरा मन कह रहा था कि इससे वह क्या हासिल कर पायेगा वह भाग्य के उगते सूरज को नमन करे और चाँदी की कुल्हाड़ी को महापुरुष के कहे अनुसार नदी को वापस कर सोने की रख ले क्योंकि सोना ज्यादा मँहगा बिकेगा, इसकी बिक्री से प्राप्त धन से वह और उसके शेष परिवार का जीवन हमेशा के लिए गरीबी लाचारी से मुक्त हो सकेंगे, उसकी आने वाली पुस्तें बदहाली से मुक्त हो जाएँगी और एक सम्मान और खुशहाली की जिंदगी व्यतीत कर सकेंगी।

विचार थे कि जैसे सावन की कभी रिमझिम फुहार, कभी बड़ी-बड़ी तेज बूँदें, कभी बादल की गड़गड़ाहट और कभी अँधेरी काली घटाओं के बीच दिल दहला देने वाली बिजली की तेज कौंध, बड़ा असहज और लाचार था वह लकड़हारा। बोझिल वह वहीं पेड़ के नीचे जमीन पर बैठ सा गया।

उसके मनो-मस्तिष्क में लालच, अवसर, बेईमानी, जलालत-जहालत, गरीबी, रोज-रोज की यंत्रणा उसे एक ओर घेरे थी, दूसरी तरफ पाप-पुण्य ईमानदारी अपनी दलीलें दे रहे थे। सभी उसे अपने-अपने प्रस्ताव-सुझाव देने को तत्पर थे, सभी की बातें उसे आकर्षित कर रही थीं। वह क्या करे और क्या नहीं। तभी समय ने अपनी व्यावहारिकता का परिचय देते हुए उससे कहा—रे मूर्ख! कहाँ की ईमानदारी, कहाँ के पुण्य, कहाँ की निष्ठा, यह इस कलयुग में कष्ट का कारक हैं। पाप-पुण्य के चक्कर में मत पड़, भाग ले, मौका है।

लकड़हारा तेजी से उठा उसने चाँदी और सोने की दोनों कुल्हाड़ियाँ अपने झोले में सँभाल कर रखीं, उधर नदी उसी गति से बह रही थी, सूरज पश्चिम दिशा को अग्रसर हो रहा था उस महापुरुष का दूर-दूर तक पता नहीं था और वह दौड़ पड़ा बस्ती बाजार की ओर उसके पाँव बहुत तेजी से दौड़ रहे थे जैसे वे धरती के स्पर्श से भी बचना चाह रहे हों।

कुछ दूर दौड़ने के बाद अभी उसने पगडण्डी पार ही की थी कि उसे कुछ हट्टे-कट्टे लोग उसकी ओर बढ़ते दिखे, थोड़ा नजदीक आने पर उसने पहचाना कि वे लुटेरे हैं उनके हाथों में लाठियाँ दिखने लगी थीं, उसे लगा कि बस कुछ ही देर में उसकी दोनों कुल्हाड़ियों को लूट लिया जायेगा और उसकी ठुकाई भी होगी सो अलग, वह तेजी से दिशा बदल कर नदी के दूसरे छोर की ओर घाट वाले रास्ते पर दौड़ पड़ा तभी उसे लगा कि बाजार में इसको बेचते समय यह सूचना यदि शहर कोतवाल तक पहुँची तो उसे कारावास की सजा भुगतनी पड़ सकती है। तेजी से दौड़ते हुए वह घाट के नजदीक ही था उसे लगा कि कहीं वह अपनी जान जोखिम में डाल कर इस लालच और बेईमानी का काम तो नहीं कर रहा, वह शायद अपने बुरे दिन खुद ही बुला रहा है। लकड़हारे के भय मिश्रित विचार ने उसे फिर दुविधा में डाल दिया।

और अंततः उसने आगे न जाकर नदी की ओर दौड़ लगा दी वह तुरंत दोनों सोने व चाँदी की कुल्हाड़ियों को गहरी नदी में फेंककर इस लालच और बेईमानी से जैसे तत्काल छुटकारा चाहता था नदी की तेज धारा का शोर उसके कानों तक पहुँचने लगा, नदी की स्वच्छ असीम जल राशि को छूकर आने वाली ठंडी हवा ने लकड़हारे के पसीने-पसीने बदन में एक अजीब-सी सिहरन पैदा कर दी और लकड़हारा जैसे-जैसे नदी की धार की ओर बढ़ता जा रहा था उसका मस्तिष्क तमाम दुश्चिंताओं से मुक्त होता जा रहा था कि तभी पगडण्डी से नदी की रेत के जुड़ने के बिंदु पर एक अधकटे पेड़ के ठूठ से उसका पैर टकराया और एक जोर की चीख से वह धड़ाम से गिरा।

लकड़हारे की आँख खुल गयी वह लकड़ी का ढेर काटने के बाद थककर गहरी नींद जो सो गया था। उसने देखा उसकी लोहे की वही पुरानी कुल्हाड़ी लकड़ी के ढेर के ऊपर रखी मानो उससे कह रही थी लालच, बेईमानी और पाप से कहीं बेहतर है ईमानदारी की अभिलाषा।

हर मनुष्य के पास ऊपर वाले ने एक कुल्हाड़ी दी है, उसी पर मनुष्य को विश्वास करना चाहिए।

यह कथा एक पुरानी कहानी का नया रूपांतरण है जो वर्तमान दौर को साथ लेकर आज की स्थितियों और समाज की व्यवस्थाओं को देखते हुए लकड़हारे को जन सामान्य व्यक्ति/जनता के रूप में स्थापित करती है।

इस ईश्वर से प्रदत्त कुल्हाड़ी के कई नाम हो सकते हैं यह पढ़े-लिखों की कलम है, होनहारों का मस्तिष्क, कारीगरों की कुशलता और कामगारों के औजार। यही है उसकी ईमानदारी की कुल्हाड़ी।

❑❑❑

पूर्व सूचना अधिकारी, भारत सरकार। मूलत: कवि, लेखक, स्वतन्त्र पत्रकार।
स्वीट होम एपार्टमेंट, एफ एफ-1, 4/212 वैशाली, गाजियाबाद-201010। मोबाइल : 09868228699

लघुकथा

शोभा रस्तोगी

बौना रिश्ता

"दादी! पाँच हज़ार में बनेगी तेरी आँख।" आई स्पेशलिस्ट ने कहा।

"मेरे कने पीसा कोनी भाई।" वृद्धा ने उत्तर दिया।

"पहली आँख किस तरह बनी थी?" डॉक्टर ने पूछा।

"जब सारे बच्चे सांझी रवैं थे। इब सब कल्ले रवैं हैं।" दादी के मन में से हूक सी उठी।

"सबसे थोड़ा-थोड़ा पैसा लो न दादी।" डॉक्टर ने समझाया।

"इब कोई न पूछता मनै।" वृद्धा का कातर स्वर था।

"क्या करते हैं तेरे बच्चे?"

"दो बेट्टे अफसर सैं। एक पुलिस मा सै। बेट्टी बैंक में लाग री सै।" गर्वीली आवाज़ में वृद्धा ने बताया।

"क्या...? फिर भी...?" ताज्जुब में था डॉक्टर।

"मेरी खातर किसी पे न टेम सै, न पीसा।" वह दुखी थी।

"कोई बात नहीं दादी। जो दे सको, दे दियो। बाकी मैं कर दूँगा। आराम से अपनी आँख बनवा।"

खून का रिश्ता मानवता के रिश्ते के आगे कहीं बहुत बौना हो गया था।

❑❑❑

RZD-208B, डी.डी.ए. पार्क रोड, राजनगर-2, पालम कालोनी, नई दिल्ली-110077। मोबाइल : 09650267277